Indian Streams Reserach Journal
Vol.1,Issue.XII/Jan; 12pp.1-4
डॉ. अंजु बाला
ISSN:-2230-7850

Research Papers

महाकवि निराला की प्रगति चेतना

डॉ. अंजु बाला

प्रस्तावना :–

प्रगति का अर्थ है आगे बढ़ना। वे कविताएँ जिनमें प्रगति अथवा उत्कर्ष की प्रेरणा दी गई हो प्रगतिवादी कही जा सकती है। निराला के सम्पूर्ण काव्य में उपेक्षित दलित के उन्नयन और जन साधरण की प्रतिष्ठा के प्रति गहरी आस्था के दर्शन होते हैं। यह आस्था किसी विचारधरा से प्रेरित नहीं है और न ही किसी काल विशेष में उपेक्षित के प्रति सहानुभूति की अभिव्यक्ति बल्कि इसका प्रमाण तो स्वयं उनका काव्य है।उनकी चेतना के बीच अन्तः सम्बन्धें का एक सिलसिला है।

निराला की कविताओं का मूल स्वर शोषित श्रमिक और कृषक वर्ग के प्रति सहानुभूति व्यक्त करना है। इस दृष्टि से निराला–काव्य पर विचार किया जाए तो स्पष्ट होता है कि निराला हिन्दी साहित्य में प्रगतिवादी का आरंभ होने से पूर्व ही इस प्रकार की कविताएँ लिखने लगे थे। उन्होंने सन् 1920 में लिखी 'बादल राग' नामक कविता में ही कृषकों की दयनीय दशा की ओर समाज का ध्यान आकर्षित किया है –

''जीर्ण बाहु है शीर्ण शरीर
तुझे बुलाता कृषक अधीर
ऐ विप्लव के वीर ।
चूस लिया है उसका सार
हाड़ मात्रा ही है आधर
ऐ जीवन के पारावार ।।''

मजदूरनी की दयनीय दशा का सवाक् चित्रा अंकित करने में भी निराला जी को पूर्ण सपफलता मिली है। इस कविता से स्पष्ट होता है कि कवि ने मजदूर–मजदूरनियों की दयनीय दशा का सूक्ष्मतापूर्वक अवलोकन किया है –

''वह तोड़ती पत्थर,
देखा मैंने इलाहाबाद के पथ पर ।
नहीं छायादार
पेड़ वह जिसके तले बैठी हुई स्वीकार
श्याम तन भर बँध यौवन
नत नयन, प्रिय–कर्म– 'रत–मन
गुरु हथोड़ा हाथ
करती बार–बार प्रहार
सामने तरू मालिका अट्टालिका, आकार।''

भिखारी के चित्राण में कवि ने अपने अंतर्मन की पूरी संवेदना उड़ेल दी है –

''वह आता
दो टूक कलेजे के करता पछताता पथ पर आता
पेट पीठ दोनों मिलकर हैं एक
चल रहा लकुटिया टेक
मुटठी भर दाने को – भूख मिटाने को
मुँह पफटी पुरानी को पफैलाता।''

निराला की परवर्ती कविता में महान् मनुष्य सत्य' से हमारा साक्षात्कार होता है। इस दौर की कविता छायावादी ऊँचाई से उतरकर यथार्थवादी ज़मीन पर आए हैं। 'कुकुरमुत्ता' की रचना से निराला के भावबोध में गुणात्मक परिवर्तनत आता है। रचना प्रक्रिया के उस दौर में, जो खिचड़ी 'कुकुरमुत्ता' के रूप में तैयार हुई वह अभी अध्कचरी और कसरी है। लेकिन समकालीन यथार्थ की जो खिचड़ी 'अणिमा', 'बेला', 'नए पत्ते' की रचनाओं के रूप में रही, वही उस युग की सबसे ताजी कविता थी –

खुला भेद विजय भी कहा हुए जो
लहू दूसरों का पिये जा रहे हैं।

आज अमीरों की हवेली होगी किसानों की पाठशाला
धेबी, पासी, चमार, तेली खालेंगे अंधेरे का ताला।

'कुकरमुत्ता' से लेकर 'नए पत्ते' की रचनाओं में 'देवी सरस्वती' निराला की 'प्रगतिशील संरचना धर्मिकता' की सर्वोत्तम उपलब्धि है।

प्रगतिवादी कविताओं की एक विशेषता यह है कि उनमें विद्यमान व्यवस्था के प्रति विद्रोह भाव व्यक्त की जाती है। प्रगतिवादी कवि शोषण पर आधरित समाज–व्यवस्था में क्रांति लाकर उसे ऐसा रूप प्रदान करना चाहते हैं जो समत्व पर आधरित हो, जिसमें शोषित–शोषक का भेद मिट जाए। अतः प्रतिगवादी कविताओं में

अक्सर ही विप्लव, विद्रोह, क्रांति और प्रलय की कामना व्यक्त की जाती है। निराला की भी अनेक कविताओं में यह कामना व्यक्त की गई है। उनकी सन् 1920 की लिखी 'बादल राग' कविता में भी बादल को वीर कहकर संबोध्ति किया गया है तथा यह भावना व्यक्त की गई है कि वह छोटे–छोटे पौध् रूपी निम्न या शोषित वर्ग के लिए तो आहलाद का कारण होता है, जबकि अट्टालिकाओं और ऊँचे वृक्षों रूपी पूंजीपति या शोषक वर्ग के लिए भयप्रद होता है –

''बार–बार गर्जन
वर्षण है मूसलाधर,
हृदय थाम लेता संसार,
सुन–सुन घोर वज्र हुँकार
अशनि पात से शापित उन्नत शत–शत वीर
क्षत–विक्षत हत अचल–शरीर
गगन–स्पर्शी स्प(ि धीर।
हँसते है छोटे पौध् लघुभार
शस्य अपार,
हिल–हिल,
खिल–खिल,
हाथ हिलाते,
तुझे बुलाते,
विप्लव रव से छोटे ही, हैं शोभा पाते
अट्टालिका नहीं रे।''

प्रगतिवादि कवियों ने जहाँ एक ओर विप्लव और विध्वंस की कामना के गीत गाए हैं, वहीं देशवासियों को नव–निर्माण के लिए प्रेरित किया है। निराला जी भी इस क्षेत्रा में पीछे नहीं हैं उन्होंने देशवासियों को परस्पर भेद–भाव को भुलाकर एक होने के लिए प्रेरित किया है –

''व्यक्तिगत भेद ने
छीन ली हमारी शक्ति''

वे देश के नवयुवकों को देश के नव–निर्माण के लिए प्रेरित करते हुए कहते हैं–

''पशु नहीं, वीर तुम, समरशूर क्रूर नहीं,
काल चक्र में हो दबे आज तुम राजकुंवर
समर सरताज।''

निराला प्रगतिवाद के अग्रदूत रहे हैं। निराला जनता के कवि है। व्यावहारिक और रचनात्मक दोनों स्तरों पर वे जनता के साथ रहे। प्रगतिवादी साहित्य में निराला का स्थान अप्रतिम है।